आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिन्दी गौरव

(क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ की गृह पत्रिका)

अंक : 05 (वर्ष 2021-22; शक संवत 1943-44)

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़

(विदेश मंत्रालय, भारत सरकार)

24 जून 2021 को पासपोर्ट सेवा दिवस समारोह के दौरान माननीय विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर, माननीय विदेश राज्य मंत्री श्री वी. मुरलीधरन एवं श्री संजय भट्टाचार्य, सचिव (सीपीवी एवं ओआईए)

'हिंदी गौरव' के चतुर्थ अंक के विमोचन

भारतवर्ष की राजभाषा चाहे जो हो और जैसी भी हो पर इतना निश्चित है कि भारतवर्ष की केन्द्रीय भाषा हिंदी है। लगभग आधा भारतवर्ष उसे अपनी साहित्यिक भाषा मानता है, साहित्यिक भाषा अर्थात् उसके हृदय और मस्तिष्क की भूख मिटाने वाली, करोड़ों की आशा-आकांक्षा, अनुराग-विराग, रुदन-हास्य की भाषा।

- हजारीप्रसाद द्विवेदी

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

हिन्दी गौरव

(क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ की गृह पत्रिका)

अंक : 05 (वर्ष 2021-22; शक संवत 1943-44)

मुख्य संरक्षक

श्री शिवास कविराज (भा.पु.से)

क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़

संरक्षक

श्री अमित कुमार रावत

उप पासपोर्ट अधिकारी

सह-संरक्षक

श्री सहदेव कौशिक

वरिष्ठ अधीक्षक

संपादक

श्री कृष्णा जी पाण्डेय

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

संपादकीय सहयोग

श्री राम दास (सहायक अधीक्षक), श्री राजेन्द्र प्रसाद (वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक),
श्री राकेश सिंह (वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक), कर्मवीर सिंह (कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक),
श्री राकेश मेचू (कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक), श्री वरिंदर (डीईओ)

पत्र व्यवहार का पता

संपादक, हिंदी गौरव,
क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ (विदेश मंत्रालय, भारत सरकार)
एससीओ 28-32, सेक्टर 34ए, चंडीगढ़ - 160022

पत्रिका में प्रकाशित लेखों आदि में व्यक्त विचार अथवा दृष्टिकोण संबंधित लेखक / रचनाकार के हैं। उनसे संपादक अथवा कार्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रम

1.	माननीय विदेश राज्य मंत्री जी का संदेश	3
2.	सचिव (सीपीवी एवं ओआईए) का संदेश	4
3.	अध्यक्ष, नराकास एवं प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त उत्तर पश्चिम क्षेत्र, चंडीगढ़ का संदेश	5
4.	अपर सचिव (पीएसपी) एवं मुख्य पासपोर्ट अधिकारी का संदेश	6
5.	क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी का संदेश	7
6.	संरक्षक की कलम से	9
7.	सह संरक्षक की कलम से	10
8.	संपादकीय	11
9.	12 'प्र'... : डॉ. सुमीत जैरथ, सचिव, राजभाषा विभाग	13
10.	कार्यालय को पुरस्कार – एक रिपोर्ट : श्री राकेश सिंह, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	21
11.	हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम	22
12.	'हिन्दी गौरव' का विमोचन – एक रिपोर्ट : श्री राम दास, सहायक अधीक्षक	24
13.	संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद : अमित कुमार रावत, उप पासपोर्ट अधिकारी	25
14.	भारत की बिंदी है हिंदी : सहदेव कौशिक, वरिष्ठ अधीक्षक	26
15.	पंचतत्व : नीलम कुमारी	27
16.	पासपोर्ट सेवा : श्री कृष्णा जी पाण्डेय, क. अनुवाद अधिकारी	29
17.	सीख : वंदना, सहायक अधीक्षक	31
18.	जीवन में शिक्षा का महत्व : रूपलाल, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	32
19.	पर्यावरण दूषण, दूर हो प्रदूषण : रमेश चंद्र, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	33
20.	तालाबंदी : रमेश कुमारी, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	34
21.	कोरोना की सीख : राकेश कुमार, कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक	35
22.	बटोहिया - कल, आज और कल : श्री कृष्णा जी पाण्डेय, क. अनुवाद अधिकारी	36
23.	पासपोर्ट सेवा दिवस 2021 की झलकियाँ	39
24.	बच्चों का कोना	40
25.	हाथी और छह दृष्टि दिव्यांग : प्रफुल चंद्र साह, अधीक्षक	41
26.	समय कहाँ है : रमनदीप कौर, सहायक अधीक्षक	42
27.	मोबाइल : शिव कुमार सिंह, कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक	42
28.	कोशिश कर : साधना शुक्ला, वरिष्ठ अधीक्षक	43
29.	कर्तव्य पथ : रोशन सिंह, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	43
29.	समय का सदुपयोग : सुखदेव कुमार, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	44

वी. मुरलीधरन
V. Muraleedharan

सत्यमेव जयते

विदेश राज्य मंत्री एवं
संसदीय कार्य राज्य मंत्री
Minister of State for External Affairs &
Minister of State for Parliamentary Affairs
Government of India

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ राजभाषा पत्रिका 'हिंदी गौरव' के पंचम अंक का प्रकाशन कर रहा है।

राजभाषा पत्रिकाओं का प्रकाशन कर पासपोर्ट कार्यालय न केवल राजभाषा की उन्नति–प्रगति अपितु जनसाधारण हेतु पासपोर्ट विषयक सेवाओं के प्रचार–प्रसार में भी अपनी अहम और सशक्त भूमिका निभा रहे हैं। यह जानना और भी सुखद है कि हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं क्रियान्वयन के लिए जारी दिशा–निर्देशों के अनुपालन हेतु चंडीगढ़ कार्यालय को विगत तीन वर्षों से मंत्रालय द्वारा पुरस्कृत किया जाता रहा है।

पत्रिकाओं के नियमित प्रकाशन से कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने के लिए नई ऊर्जा का संचार होता रहता है। मेरा विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी हमारे कार्मिकों की रचनात्मकता और उनकी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनेगा। पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कार्मिकों को अनंत शुभकामनाएं।

(वी. मुरलीधरन)
विदेश राज्य मंत्री

Office : South Block, New Delhi-110 011. Tel : 011-23011141, 23014070, 23794337 Fax : 011-23011425

Sanjay Bhattacharyya
Secretary (CPV & OIA)

सत्यमेव जयते

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI

संदेश

यह हर्ष का विषय है की पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ अपनी राजभाषा पत्रिका '**हिन्दी गौरव**' के पंचम अंक जो आजादी के 75 साल पूर्ण होने पर देश में मनाए जाने वाले 'अमृत महोत्सव' पर आधारित है ।

पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ में कर्मियों के मध्य रचनात्मकता बढ़ाने व राजभाषा हिन्दी के प्रति अनुकूल वातावरण बनाने में राजभाषा पत्रिका हिन्दी गौरव ने बहुमूल्य योगदान प्रदान किया है जिसके फलस्वरूप कार्यालय को विगत तीन वर्षो के दौरान निरंतर विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर अक्षर वृक्ष पुरस्कार तथा विभिन्न अन्य मंचों पर सम्मानित किया गया है । पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ इस उपलब्धि के लिए प्रशंसा का पात्र है ।

मेरा विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी कार्यालय के कर्मियों में राजभाषा के प्रति व्यावहारिक पक्ष को और अधिक उन्नत करने में अपनी सार्थक भूमिका निभायेगा ।

इस पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति और उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवम शुभकामनाएँ ।

संजय भट्टाचार्य

(संजय भट्टाचार्य)
सचिव (सी.पी.वी. एवं ओ.आई.ए.)

दिनांक: 01 जुलाई 2021
नई दिल्ली

2013, 'C' Wing, Jawaharlal Nehru Bhawan, New Delhi-110011
Tel : 49018134 Fax : 49018135 E-mail : secycpv@mea.gov.in

प्रभात कुमार
अपर सचिव (पासपोर्ट सेवा कार्यक्रम)
और मुख्य पासपोर्ट अधिकारी

सत्यमेव जयते

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI

संदेश

पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ की अपनी राजभाषा पत्रिका **'हिन्दी गौरव'** के माध्यम से आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। यह हर्ष का विषय है कि पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ अपनी पत्रिका हिन्दी गौरव के प्रकाशन की निरंतरता में इसका आगामी पंचम अंक प्रकाशित करने जा रहा है जो मुख्यत:आजादी के अमृत महोत्सव पर केन्द्रित होगा।

आज विश्व स्तर पर हिन्दी एक सशक्त भाषा के रूप में विद्यमान हो रही है तथा इस भाषा को बोलने, लिखने और समझने वाले लोगों की संख्या में इस भाषा के अपने सहज तथा सरल स्वभाव के कारण निरंतर वृद्धि हो रही है। यह हमारे लिए गौरव की बात है।

पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए निरंतर वर्ष 2019, 2020 एवं 2021 के लिए विदेश मंत्रालय द्वारा विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर अक्षर वृक्ष पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इसी क्रम में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चंडीगढ़ द्वारा भी कार्यालय को वर्ष 2018-19 के दौरान हिन्दी में उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। राजभाषा के क्षेत्र में इस उल्लेखनीय कार्य के लिए पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ के समस्त अधिकारी और कर्मचारी विशेष प्रशंसा के पात्र है।

मैं, राजभाषा पत्रिका 'हिन्दी गौरव' के सफल प्रकाशन में योगदान देने वाले संपादक मण्डल एवम रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि यह पत्रिका इसी प्रकार अनवरत रूप से प्रकाशित होती रहेगी।

नई दिल्ली
दिनांक: 30 जून 2021

(प्रभात कुमार)

टेलिफैक्स : 0172-2544517, 2544499

भारत सरकार/GOVT. OF INDIA
आयकर विभाग/INCOME TAX DEPARMENT
अध्यक्ष,नराकास एवं प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय(उ.प्र. क्षेत्र), आयकर भवन, सेक्टर-17-ई,चण्डीगढ़
O/o The Chairman, TOLIC & Pr. CCIT (NWR), Aayakar Bhawan, Sector-17-E, Chandigarh

श्रीकृष्ण
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

दिनांक 06.07.2021

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि आपके कार्यालय द्वारा "**हिंदी गौरव**" के पंचम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए आपके कार्यालय को मिले पुरस्कारों के लिए हार्दिक बधाई, विशेषकर विदेश मंत्रालय द्वारा लगातार तीसरे वर्ष मिले पुरस्कार के लिए।

इस वर्ष देश भर में आजादी की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। जिन महान लोगों के योगदान से आज हम स्वतंत्र हैं उनके प्रयासों और उन राष्ट्रीय नायकों की उपलब्धियों से सीख लेकर हमें अपने वर्तमान राष्ट्र को उनके सपनों का राष्ट्र बनाना है। यह कार्य सभी के एकजुट प्रयासों से ही संभव है।

आशा है कि 'हिंदी गौरव' पाठकों को उन राष्ट्रनायकों व उनके प्रेरक कार्यों से जागरूक करने का प्रयास करेगी। आपके मार्गदर्शन में आपका कार्यालय इसी प्रकार सफलता की सीढियां चढ़ते हुए शिखर पर पहुंचे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ,

श्रीकृष्ण
(श्रीकृष्ण)

सत्यमेव जयते

संदेश

शिवास कविराज (भा.पु.से.)
क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़

यह बताते हुए मुझे अत्यंत गौरव का बोध हो रहा है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ अपनी वार्षिक गृह पत्रिका 'हिन्दी गौरव' के पांचवे अंक का प्रकाशन कर रहा है। राजभाषा पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं क्रियान्वयन में महती भूमिका निभाती रही हैं। कार्यालयों द्वारा पत्रिकाओं के प्रकाशन से न केवल वहाँ कार्यरत कार्मिकों की अभिव्यक्ति के अलग-अलग रूप सामने आते हैं, अपितु इससे उनकी रचनात्मकता में वृद्धि भी होती है।

राजभाषा का प्रसार-प्रचार एवं कार्यालय के कामकाज आदि में इसका प्रयोग बढ़ाना मेरी प्राथमिकता में शामिल रहा है। कार्यालय प्रमुख होने के नाते यह मेरा संवैधानिक दायित्व भी है। विदेश मंत्रालय द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों का समुचित अनुपालन कराना और राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अथक प्रयास करना हमारे अधिकारियों और कार्मिकों के दैनिक कामकाज में परिलक्षित होता रहा है। इसमें जनसाधारण का उत्साहपूर्वक भाग लेने से सुखद परिणाम देखने को मिले हैं। इन परिणामों के कारण हमारी जिम्मेदारियाँ और बढ़ जाती हैं।

विदेश मंत्रालय द्वारा विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर 'ख' भाषा क्षेत्र में स्थित पासपोर्ट कार्यालयों में उत्कृष्ट कार्य के लिए हमारे कार्यालय को वर्ष 2019 से लगातार पुरस्कृत करना इस हेतु किये जा रहे हमारे सद्प्रयासों को दर्शाता है। इसी कड़ी में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.-1), चंडीगढ़ द्वारा हमारे कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'हिंदी गौरव' को वर्ष 2018-19 के लिए तृतीय पुरस्कार प्रदान करने का निर्णय हमें उर्जस्वित करता है। इतना ही नहीं नराकास (का.-1), चंडीगढ़ द्वारा कार्यालय को 2018-19 में बड़े सरकारी कार्यालयों की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा से कार्यालय में हर्ष का वातावरण बना है। नराकास द्वारा ही वर्ष 2019 के दौरान आयोजित स्व-रचित हिंदी काव्य प्रतियोगिता में कार्यालय के श्री कृष्णा जी पाण्डेय, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया था।

❖❖❖❖❖

'स्वच्छ भारत मिशन' के तहत निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हमारे सामूहिक कर्तव्य में शामिल है। नगर निगम, चंडीगढ़ द्वारा स्वच्छता सर्वेक्षण-2021 के दौरान बड़े सरकारी कार्यालयों की श्रेणी में पासपोर्ट सेवा केंद्र, चंडीगढ़ को पुरस्कृत किया गया।

कबीरदास जी कहते हैं:-

"धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय,
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।"

राजभाषा के क्रियान्वयन एवं प्रगामी प्रयोग सहित स्वच्छता आदि की दिशा में किए गए/जा रहे हमारे उल्लेखनीय योगदान के लिए पुरस्कृत किए जाने से हमें नई ऊर्जा मिल रही है। जब हमारे प्रयासों को सराहना मिलती है तो हमें सही दिशा में प्रयासरत होने का पता चलता है। नि:संदेह, इससे एक ओर हमारी जवाबदेही बढ़ी है, बढ़ती भी है, तो दूसरी ओर कार्यालय में एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण हुआ है। हम आशान्वित हैं कि इससे हमारे कार्यालय की कार्य-संस्कृति में गुणात्मक व रचनात्मक परिवर्तन आएगा और हमें अपने प्रयासों में निरंतरता लाने की प्रेरणा मिलती रहेगी।

मैं पत्रिका के प्रकाशन में शामिल सभी अधिकारियों व कार्मिकों को बधाई देते हुए भावी पाठकों को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ। 'आज़ादी का यह अमृत महोत्सव' हमारे बीच शांति, मैत्री, सद्भाव व समग्र उन्नति का मार्ग प्रशस्त करे इन्हीं कामनाओं सहित।

"जय हिंद"

शिवास

शिवास कविराज (भा.पु.से.)

सत्यमेव जयते

अमित कुमार रावत
उप पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़

संरक्षक की कलम से

मुझे यह जानकार अपार हर्ष हो रहा है कि हमारी राजभाषा पत्रिका 'हिन्दी गौरव' का पांचवा अंक प्रकाशित होने जा रहा है। यह और भी सुखद है कि हम साथ ही साथ 'आजादी का अमृत उत्सव' भी मना रहे हैं।

स्वाधीनता के पहले से ही हमारे देश की एक राष्ट्रभाषा हो, ऐसी परिकल्पना की जाने लगी थी। हमारा देश जब सदियों की गुलामी की बेड़ियों को तोड़ स्वाधीन हुआ तो एक ऐसी भाषा की आवश्यकता महसूस की जाने लगी जिसमें सरकार के कार्य संपन्न किए जा सकें। उस समय यह भी संकल्पना की गई कि यह भाषा जनसाधारण, जन मानस की भाषा हो। विदित हो कि आज़ादी के पूर्व सरकारी कामकाज आदि की भाषा मुख्यत: अंग्रेजी रही।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 में राजभाषा अर्थात संघ की वह भाषा जिसमें सरकार का कामकाज संपन्न हो सके का उल्लेख मिलता है। सांस्कृतिक एवं भाषायी विविधता वाले हमारे देश में समरसता व एकता का इससे बड़ा उदाहरण क्या ही होगा कि संविधान सभा में हिंदी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव श्री गोपाल स्वामी आयंगर रखा। संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को देवनागरी लिपि में भारत की राजभाषा के रूप में एकमत से स्वीकार किया।

हमारा कार्यालय राजभाषा के कार्यान्वयन में प्रमुख भूमिका निभाता रहा है। ई-मेल के माध्यम से किए जा रहे पत्राचार में हिन्दी को प्रमुखता दी जा रही है। सूचनापट्ट पर अर्थ सहित 'आज का शब्द' लिखा जा रहा है। कर्मचारियों एवं अधिकारियों के लिए आयोजित 'हिंदी कार्यशाला' आदि में राजभाषा एवं युनिकोड से संबंधित जानकारी देना, कंप्यूटर पर हिंदी टंकण का अभ्यास कराना आदि शामिल होता है। इन कार्यशालाओं में भाग लेने वाले अधिकारियों व कार्मिकों को मंत्रालय व राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी अनुदेशोन, दिशा-निर्देशों के बारे में भी जागरूक किया जाता है। इतना ही नहीं ऑनलाइन माध्यम से भी हिंदी का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। इसका सीधा लाभ पासपोर्ट सेवा केंद्रों में तैनात हमारे कार्मिकों और जनसाधारण को हो रहा है।

मैं, सभी अधिकारियों एवं कार्मिकों से हिंदी की विभिन्न गतिविधियों में बढ़-चढ़कर अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने और हिंदी में अपना सहज सहयोग करने की अपेक्षा करता हूँ। पत्रिका के संपादक एवं इसके प्रकाशन से जुड़े समस्त कार्मिकों/व्यक्तियों को हार्दिक बधाइयाँ।

❖❖❖❖❖

सहदेव कौशिक
वरिष्ठ अधीक्षक

सह संरक्षक की कलम से

मुझे यह जानकार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि हमारे कार्यालय की अपनी गृह पत्रिका हिंदी गौरव का पांचवा अंक प्रकाशित हो रहा है। कार्यालय अपनी गृह पत्रिका का नियमित प्रकाशन करे, यह गौरव की बात होती है। इससे भी बड़े गौरव की बात यह होती है कि पत्रिका राजभाषा में प्रकाशित की जा रही हो।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी कहते हैं "भारतवर्ष की राजभाषा चाहे जो हो और जैसी भी हो पर इतना निश्चित है कि भारतवर्ष की केंद्रीय भाषा हिंदी है। लगभग आधा भारतवर्ष उसे अपनी साहित्यिक भाषा मानता है, साहित्यिक भाषा अर्थात् उसके हृदय और मस्तिष्क की भूख मिटाने वाली, करोड़ों की आशा-आकांक्षा, अनुराग-विराग, रुदन-हास्य की भाषा।"

केवल भारत ही नहीं, विश्व के अन्य भागों में भी हिंदी बोलने-लिखने-समझने वाले लोगों की संख्या दिनोंदिन बढ़ रही है। विश्व के कई प्रतिष्ठित विश्वविद्योलयों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है। परिवर्तन की यह बयार चलती रहे, बहती रहे। और भी जन इस परिवर्तन से स्वयं जुड़ते तथा औरों को जोड़ते रहें।

कोविड-19 के द्वारा जनित दुश्वारियाँ थमी नहीं हैं। परंतु, यह समय धैर्य का है। और धैर्य के साथ-साथ अपना कर्तव्य निभाने का भी। यह समय सतर्क रहकर स्वयं के साथ-साथ औरों को भी इस महामारी से बचाने का है। हम इस बात से परिचित हैं कि इस महामारी ने हमारे बच्चों के पठन-पाठन आदि को कई तरीकों से और बहुत हद तक प्रभावित किया है। ऐसे में हमारे बच्चों के लिए रचनात्मक वातावरण के निर्माण में हम अपनी भूमिका निभा सकते हैं। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई व खेल-कूद आदि हेतु प्रेरित- प्रोत्साहित करने के साथ-साथ उनकी कलात्मक अभिव्यक्तियों को ध्यान से देखने-सुनने और इसके लिए उन्हें प्रशंसा के दो शब्द कहकर उनकी रचनात्मकता में वृद्धि कर सकते हैं।

मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका सभी पासपोर्ट कार्यालयों, अन्य कार्यालयों एवं जनसाधारण तक पहुँचेगी तथा हिंदी सेवियों के साथ-साथ हिंदी प्रेमियों को भी जोड़ने का काम करेगी। पत्रिका के प्रकाशन हेतु शुभकामनाओं साहित! ❖❖❖❖❖

श्री कृष्णा जी पाण्डेय

संपादकीय

'हिंदी गौरव' - आपकी पत्रिका का पंचम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। पत्रिका का क्रमिक व निरंतर प्रकाशन करते हुए हम फूले नहीं समा रहे हैं। यह और भी हर्ष का विषय है कि इसे सुधि पाठकों द्वारा पढ़ा-सराहा जा रहा है। इस अंक में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा संकल्पित 12 'प्र' की रूपरेखा को शामिल करना हमारे लिए गौरव की बात है। बाबू रघुवीर नारायण जी की कालजयी रचना 'बटोहिया' भी शामिल है। पिछले अंकों पर मिली आपकी प्रतिक्रियाओं के आधार पर इस अंक में भी 'बच्चों का एक कोना' है। हमारे नन्हें मेहमान बच्चों ने अपनी स्नेहिल-सुपरिचित मुस्कान, निश्छल हँसी सहित अन्य भावाभिव्यक्तियों से अपना योगदान दिया है। प्रस्तुत अंक में शामिल रचनाओं की विषय-वस्तु जनहित से संबंधित है। हाँ, समसामयिक विषय भी इसमें शामिल हैं।

हमारे बहुभाषी देश भारत में संस्कृति और भाषाएँ वह पुल हैं जो लोगों को जोड़ने का काम करती हैं। हिंदी भी जोड़ रही है —दिलों को, जन-जन को। **आचार्य देवव्रत शास्त्री** मानते हैं कि **'हिंदी जाननेवाला व्यक्ति देश के किसी कोने में जाकर अपना काम चला लेता है।'** हमारा देश 'गणतंत्र की जननी' तो है ही, यह अपनी सांस्कृतिक चेतना की आभा भी संपूर्ण विश्व में बिखेर रहा है। यह अनादि काल से ज्ञान-

विज्ञान, कला, संस्कृति, योग, अध्यात्म का केंद्र रहा है। अपनी शुरुआत से ही हिंदी ने न केवल अन्य भारतीय बल्कि विदेशी भाषाओं के भी कई प्रचलित शब्दों को सहर्ष अंगीकार किया है। इस संबंध में भारत के प्रथम राष्ट्रपति **डॉ. राजेन्द्र प्रसाद** की उक्ति है **"हिंदी चिरकाल से ही ऐसी भाषा रही है, जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का कभी बहिष्कार नहीं किया।"**

हम 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' अर्थात भारत की स्वाधीनता के 75वें वर्ष में प्रवेश का महोत्सव मना रहे हैं। भारत की आजादी में उन सभी ज्ञात, कई अनकहे और अक्सर अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों के अथक प्रयासों को बार-बार नमन। हमें उन लोगों के समूह का भी आभार करना है जिन्होंने ऐसे विचारों व भावनाओं को पोषित किया। वैसे सभी संबंधित जो आज हमारे बीच नहीं हैं, उनके योगदान और समर्पण को याद करने का समय है। समय उन सभी का आभार व्यक्त करने का भी है जो अपनी जान की परवाह किये बिना अथक डटे-खड़े हैं; और हमारी रक्षा-सुरक्षा कर रहे हैं—बाहरी ताकतों से, अंदरूनी तत्वों से। हमें भी इस हेतु यथासंभव सहयोग देना है, मिल-जुलकर, एकजुट होकर चीटियों कीं तरह। यह समय है कि हम उनके बलिदान को स्मरण करते हुए कृत संकल्प को दोहराएं कि राष्ट्र के निर्माण में हमारी सशक्त व प्रभावी भूमिका रहेगी। पूर्व प्रधानमंत्री **स्व. लालबहादुर शास्त्री जी** के विचार हमें आज भी प्रेरित करते हैं **'हमारी ताकत और स्थिरता के लिए हमारे सामने जो जरूरी काम हैं उनमें लोगों में एकता और एकजुटता स्थापित करने से बढ़ कर कोई काम नहीं हैं।'**

कहा भी जाता है कि हम भूतकाल से सीखते हैं, वर्तमान में जीते हैं और भविष्य के सपने देखते हैं। पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अपना योगदान देने के लिए सभी का कोटिश: आभार। आप सुधी पाठकों की प्रतिक्रियाएं न केवल हमारा उत्साहवर्धन करती हैं अपितु हमारा मार्गदर्शन भी। अत: हर बार की भाँति इस बार भी आपके बहुमूल्य सुझावों और विचारों की प्रतीक्षा में...

"जय हिंद"

आपका

श्री कृष्णा जी पाण्डेय

कलाकृति : सुश्री किरन कुमारी

12 'प्र' से किया जा सकता है राजभाषा हिंदी का समुचित विकास

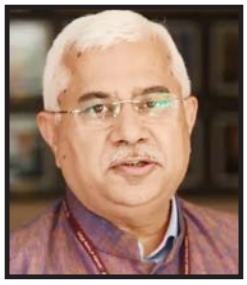

डॉ. सुमीत जैरथ
सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

राजभाषा अर्थात राज-काज की भाषा, अर्थात सरकार द्वारा आम-जन के लिए किए जाने वाले कार्यों की भाषा। राजभाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है। संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। वर्ष 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई और यह दायित्व सौंपा गया कि सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/ मंत्रालयों/ उपक्रमों/ बैंकों आदि में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाना सुनिश्चित किया जाए। तब से लेकर आज तक देश भर में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों एवं विभागों आदि में सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन तथा सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में राजभाषा विभाग की अहम भूमिका रही है। राजभाषा विभाग अपने क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से सभी स्तरों पर राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करता है।

हम सभी जानते हैं कि जब हमारे संविधान निर्माता संविधान को अंतिम स्वरूप दे रहे थे, इसका आकार बना रहे थे, उस वक्त कई सारी ऐसी चीजें थी जिसमें मत-मतांतर थे। देश की राजभाषा क्या हो?, इसके विषय में इतिहास गवाह है कि तीन दिन तक इस संदर्भ में बहस चलती रही और देश के कोने-कोने का प्रतिनिधित्व करने वाली संविधान सभा में जब संविधान निर्माताओं ने समग्र स्थिति का आकलन किया, दूरदर्शिता के साथ अवलोकन, चिंतन कर एक निर्णय पर पहुंचे तो पूरी संविधान सभा ने सर्वानुमत से 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लिया।

26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान

रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

महान लेखक **महावीर प्रसाद द्विवेदी** की पंक्तियां **'आप जिस प्रकार बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।'** को ध्यान में रखते हुए राजभाषा – हिंदी को और सरल, सहज और स्वाभाविक बनाने केलिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प है। केंद्र सरकार के कार्यालयों/ मंत्रालयों/ उपक्रमों/ बैंकों आदि में राजभाषा हिंदी में काम करने को दिन-प्रति-दिन सुगम और सुबोध बनाने का प्रयास किया जा रहा है। साथ ही साथ प्रधानमंत्री जी के "आत्मनिर्भर भारत" "स्थानीय के लिए मुखर हों (Self Reliant India- Be vocal for local) के अभियान को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत में सी-डेक, पुणे के सौजन्य से निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल "कंठस्थ" का विस्तार कर रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित हो।

राजकीय प्रयोजनों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार बढ़ाने तथा विकास की गति को तीव्र करने संबंधी संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करने के संबंध में हमारी प्रभावी रणनीति किस प्रकार की होनी चाहिए, इसका मूल सूत्र क्या

विश्व हिंदी दिवस 2021 के अवसर पर आयोजित समारोह में डॉ. सुमित जैरथ, सचिव, राजभाषा विभाग व अन्य अधिकारीगण

होना चाहिए?, इस पर विचार करने के दौरान मुझे माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए जाने वाले 'स्मृति-विज्ञान' (Mnemonics) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी नजर आती है। विदेश से भारत में निवेश बढ़ाने के लिए माननीय प्रधानमंत्री जी के छह डी-

Democracy (लोकतंत्र)
Demand (मांग)
Demographic Dividend (जनसांख्यिकीय विभाजन)
Deregulation (अविनियमन)
Descent (उत्पत्ति)
Diversity (विविधता)

से प्रेरणा लेते हुए राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने "12 प्र की रणनीति-रूपरेखा (Frame work) की संरचना की है, जो निम्न प्रकार से है :

1. प्रेरणा (Inspiration and Motivation)

प्रेरणा (Inspiration) का सीधा तात्पर्य पेट की अग्नि (Fire in the belly) को प्रज्ज्वलित करने जैसा होता है। हम सभी यह जानते हैं कि प्रेरणा में बड़ी शक्ति होती है और यह प्रेरणा सबसे पहले किसी भी चुनौती को खुद पर लागू कर दी जा सकती है। प्रेरणा कहीं से भी प्राप्त हो सकती है लेकिन यदि संस्थान का शीर्ष अधिकारी किसी कार्य को करता है तो निश्चित रूप से अधीनस्थ अधिकारी/कर्मचारी उससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं ।

2. प्रोत्साहन (Encouragement)

मानव स्वभाव की यह विशेषता है कि उसे समय-समय पर प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ती है। राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में यह प्रोत्साहन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को समय-समय पर प्रोत्साहित करते रहने से उनका मनोबल ऊंचा होता है और उनके काम करने की शक्ति में बढ़ोतरी होती है।

3. प्रेम (Love and Affection)

वैसे तो प्रेम जीवन का मूल आधार है किंतु कार्य क्षेत्र में अपने शीर्ष अधिकारियों द्वारा प्रेम प्राप्त करना कार्य क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार करता है। राजभाषा नीति सदा से ही प्रेम की रही है यही कारण है कि आज पूरा विश्व हिंदी के प्रति प्रेम की भावना रखते हुए आगे बढ़ रहा है।

4. प्राइज अर्थात पुरस्कार (Rewards)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और राजभाषा गौरव पुरस्कार दिए जाते हैं। राजभाषा कीर्ति पुरस्कार केंद्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों/बैंकों उपक्रमों आदि को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए दिए जाते हैं और राजभाषा गौरव पुरस्कार विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों बैंकों आदि के सेवारत तथा सेवानिवृत अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हिंदी में लेखन

कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। यह पुरस्कार 14 सितंबर, हिंदी दिवस के दिन माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रदान किए जाते हैं। पुरस्कारों का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि देश के कोने-कोने से इन पुरस्कारों के लिए प्रविष्टि आती है। जब मैंने राजभाषा विभाग का कार्यभार संभाला उस समय स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' के अंदर डेटाबेस को मजबूत करने के लिए स्वस्थ प्रतियोगिता एवं सचिव(रा.भा.) की ओर से प्रशस्ति पत्र देने का निर्णय किया। इस कदम का यह परिणाम हुआ कि लगभग छह महीने के अंदर ही कंठस्थ का डाटा 20 गुना से ज्यादा बढ़ गया। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि प्रतिस्पर्धा एवं प्राइज यानि पुरस्कार का महती योगदान होता है।

5. प्रशिक्षण (Training)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के माध्यम से प्रशिक्षण का कार्य करता है। पूरे वर्ष अलग-अलग आयोजनों में सैकड़ों की संख्या में प्रशिक्षणार्थी इन संस्थानों के माध्यम से प्रशिक्षण पाते हैं। कहते हैं – "आवश्यकता, आविष्कार और नवीकरण की जननी है।" कोरोना महामारी ने हम सभी के सामने अप्रत्याशित संकट और चुनौती खड़ी कर दी। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर हम सभी को इस महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। इससे प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने आपदा को अवसर में परिवर्तित कर दिया। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का आश्रय लेते हुए – ई-प्रशिक्षण और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से हमारे दो प्रशिक्षण संस्थान - केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो ने पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत-स्थानीय के लिए मुखर हों (Be Local for Vocal) अभियान के अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम को स्वदेशी NIC-Video Desk Top पर माइग्रेट किया जा रहा है।

6. प्रयोग (Usage)

'यदि आप प्रयोग नहीं करते हैं तो आप उसे भूल जाते हैं (If you do not use it, you lose it) हम जानते हैं कि यदि किसी भाषा का प्रयोग कम किया जाए या न के बराबर किया जाए तो वह धीरे-धीरे मन मस्तिष्क के पटल से लुप्त होने लगती है इसलिए यह आवश्यक होता है की भाषा के शब्दों का व्यापक प्रयोग समय समय पर करते रहना चाहिए। हिंदी का प्रयोग अपने अधिक से अधिक काम में मूल रूप से करें ताकि अनुवाद की बैसाखी से बचा जा सके और हिंदी के शब्द भी प्रचलन में रहें।

7. प्रचार (Advocacy)

संविधान ने हमें राजभाषा के प्रचार का एक

महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा है जिसके अंतर्गत हमें हिंदी में कार्य करके उसका अधिक से अधिक प्रचार सुनिश्चित करना है। हिंदी के प्रचार में हमारे शीर्ष नेतृत्व – माननीय प्रधानमंत्री जी तथा माननीय गृह मंत्री जी राजभाषा हिंदी के मेसकोट- ब्रैंड राजदूत (Brand Ambassadors) के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। देश-विदेश के मंचों पर हिंदी के प्रयोग से राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों का उत्साह बढ़ा है। हम जानते हैं कि स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में एक संपर्क भाषा की आवश्यकता महसूस की गई। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का पक्ष इसलिए प्रबल था क्योंकि इसका अंतरप्रांतीय प्रचार शताब्दियों पहले ही हो गया था। उसके इस प्रचार में किसी राजनीतिक आंदोलन से ज्यादा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित तीर्थ स्थानों में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं का योगदान था। उनके द्वारा भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों के साथ संपर्क करने का एक प्रमुख माध्यम भाषा हिंदी थी जिससे स्वत: ही हिंदी का प्रचार होता था। आधुनिक युग में प्रचार का तरीका भी बदला है। तकनीक के इस युग

डॉ. सुमित जैरथ, सचिव, राजभाषा विभाग; डॉ. मीनाक्षी जॉली, संयुक्त सचिव (राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय) एवं श्री सजीव बाबु कुरूप, संयुक्त सचिव (आरबीबी, आई एंड टी, विदेश मंत्रालय)

शिक्षा के प्रसार के लिए नागरी लिपि का सर्वत्र प्रचार आवश्यक है। - *राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद'*

में संचार माध्यमों को बड़ा योगदान है इसलिए राजभाषा हिंदी के प्रचार में भी इन माध्यमों का अधिकतम उपयोग समय की मांग है।

8. प्रसार (Transmission)

राजभाषा हिंदी के काम का प्रसार करना सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों आदि की प्राथमिक जिम्मेदारी में है और यह संस्था प्रमुख का दायित्व है कि वह संविधान के द्वारा दिए गए दायित्वों जिसमें कि प्रचार-प्रसार भी शामिल है, का अधिक से अधिक निर्वहन करे। राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है, इसलिए राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न केंद्रीय संस्थानों द्वारा प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार दिया जाता है। राजभाषा विभाग द्वारा अपनी वेबसाइट rajbhasha.gov.in पर बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो सकेंगे। राजभाषा हिंदी के प्रसार में दूरदर्शन, आकाशवाणी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके साथ-साथ बालीवुड ने हिंदी के प्रसार में अद्वितीय योगदान दिया है।

9. प्रबंधन (Administration and Management)

यह सर्वविदित है कि किसी भी संस्थान को उसका कुशल प्रबंधन नई ऊचाइयों तक ले जा सकता है इसे ध्यान में रखते हुए संस्था प्रमुखों को राजभाषा के क्रियान्वयन संबंधी प्रबंधन की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम 1963, नियमों तथा समय-समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित कराएं, इन प्रयोजनों के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच-बिंदु बनवाएं और उपाय करें।

10. प्रमोशन (पदोन्नति) (Promotion)

राजभाषा हिंदी में तभी अधिक ऊर्जा का संचार होगा, जब राजभाषा कार्यान्वयन के लिए नियुक्त अधिकारी एवं कर्मचारी ; केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के सदस्यगण, सभी उत्साहवर्धक और ऊर्जावान हों और अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा और समर्पण से निभाएं। समय-समय पर प्रमोशन (पदोन्नति) मिलने पर निश्चित रूप से उनका मनोबल बढ़ेगा और इच्छाशक्ति सुदृढ़ होगी।

11. प्रतिबद्धता (Commitment)

राजभाषा हिंदी को और बल देने के लिए मंत्रालय/विभाग/सरकारी उपक्रम/राष्ट्रीयकृत बैंक के शीर्ष नेतृत्व (माननीय मंत्री महोदय, सचिव, संयुक्त सचिव (राजभाषा), अध्यक्ष और महाप्रबंधक) की प्रतिबद्धता परम आवश्यक है।

हिंदी भाषा अपनी अनेक धाराओं के साथ प्रशस्त क्षेत्र में प्रखर गति से प्रकाशित हो रही है। - *छविनाथ पांडेय*

माननीय संसदीय राजभाषा समिति के सुझाव अनुसार और राजभाषा विभाग के अनुभव से यह पाया गया है कि जब शीर्ष नेतृत्व हिंदी के प्रगामी/उत्तरोत्तर ही नहीं, अपितु अधिकतम प्रयोग के लिए स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हैं तब उनके उदाहरणमय नेतृत्व (Exemplary Leadership) से पूरे मंत्रालय/विभाग/उपक्रम/बैंक को प्रेरणा और प्रोत्साहन मिलता है। जब वे हिंदी के लिए एक अनुकूल और उत्साहवर्धक वातावरण बनाते हैं और बीच-बीच में हिंदी के कार्यान्वयन की निगरानी (Monitoring) करते हैं तब हिंदी की विकास यात्रा और तीव्र होती है जैसे कि गृह मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय में देखा गया है। अभी हाल में ही राजभाषा विभाग ने सबको पत्र लिखकर आग्रह किया है :

(क) हर माह में एक बार सचिव/अध्यक्ष अपनी अध्यक्षता में जब वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक करते हैं तब इसमें हिंदी में काम-काज की प्रगति और राजभाषा नियमों के कार्यान्वयन का मद भी अवश्य रखें और चर्चा करें।

(ख) अपने मंत्रालय/विभाग/संस्थान में अपने संयुक्त सचिव (प्रशासन)/प्रशासनिक प्रमुख को ही हिंदी कार्यान्वयन का उत्तरदायित्व दें और हर तिमाही में उनकी अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति (OLIC) की बैठक करें।

12. प्रयास (Efforts)

राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी रूप से सुनिश्चित करने की दिशा में यह अंतिम 'प्र' सबसे महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार हमें लगातार यह प्रयास करते रहना है कि राजभाषा हिंदी का संवर्धन कैसे किया जाए। यहां कवि सोहन लाल द्विवेदी जी की पंक्तियां एकदम सटीक बैठती हैं कि

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आख़िर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करते हुए राजभाषा हिंदी को और अधिक सरल बनाने के

अपनी सरलता के कारण हिंदी प्रवासी भाइयों की स्वत: राष्ट्रभाषा हो गई। - *भवानीदयाल संन्यासी*

लिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प और निरंतर प्रयासरत है। विभाग सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology) का भी आश्रय ले रहा है। विभाग का मानना है कि राजकीय प्रयोजनों में हिंदी की गति को तीव्र करने के लिए ये दोनों आवश्यक परिस्थितियां (Necessary Conditions) हैं। इस दिशा में और गति देने के लिए शीर्ष नेतृत्व की प्रतिबद्धता और प्रयास पर्याप्त परिस्थितियां (Sufficient Conditions) हैं।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन तत्परता और पूरी निष्ठा के साथ करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों / कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि प्रशासन में पारदर्शिता आए और आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ निर्बाध रूप से उठा सके। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन बारह 'प्र' को ध्यान में रखकर राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन करने की दिशा में सफलता प्राप्त होगी और हम सब मिलकर माननीय प्रधानमंत्री जी के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत ; 'सुदृढ़ आत्मनिर्भर भारत' के सपने को साकार करने में सफल होंगे।

❖❖❖❖❖

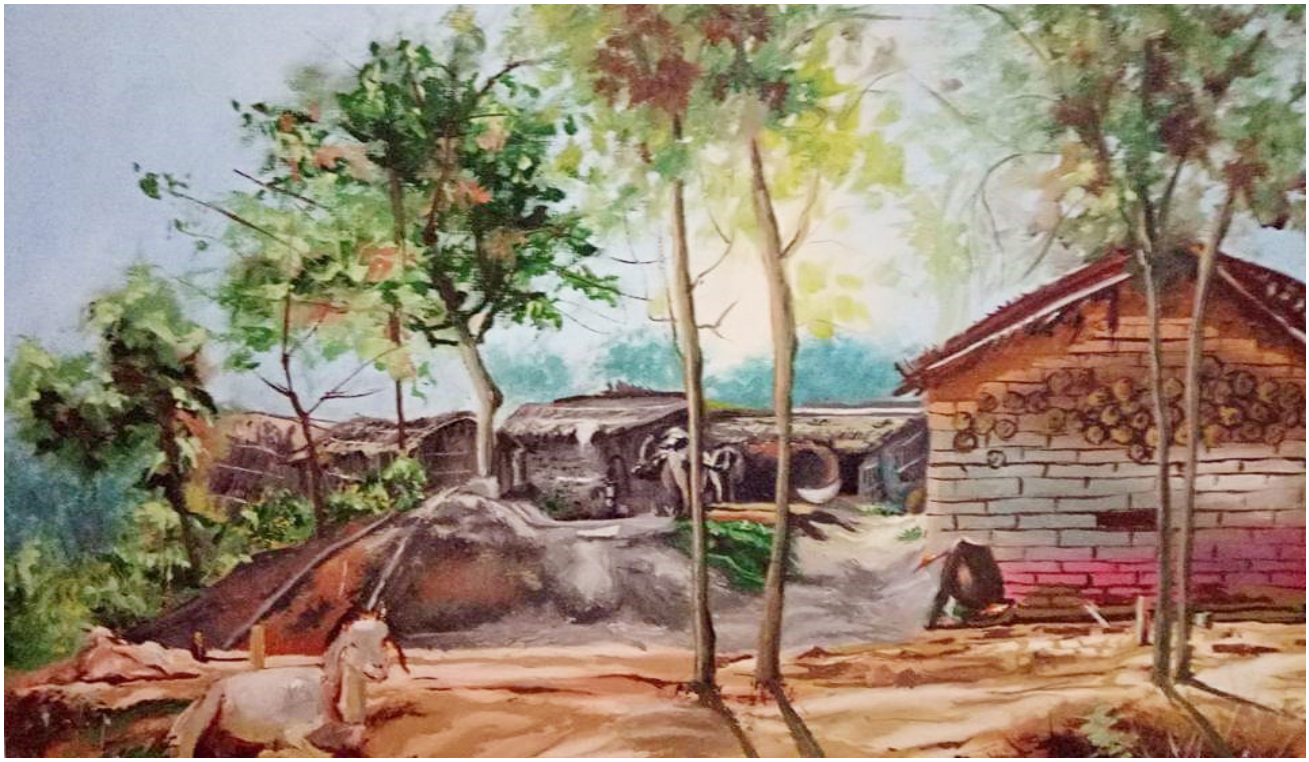

कलाकृति : सुश्री किरन कुमारी

हिंदी जाननेवाला व्यक्ति देश के किसी कोने में जाकर अपना काम चला लेता है। - *देवव्रत शास्त्री*

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ को पुरस्कार

विदेश मंत्रालय द्वारा 'ख' क्षेत्र के पासपोर्ट कार्यालयों में हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ को पुरस्कृत किया गया। विश्व हिंदी दिवस-2021 के अवसर पर आयोजित समारोह में माननीय विदेश राज्य मंत्री श्री वी. मुरलीधरन जी ने माननीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय जी की गरिमामयी उपस्थिति में यह पुरस्कर प्रदान किया। कार्यालय की ओर से श्री शिवास कविराज, क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी एवं श्री कृष्णा जी पाण्डेय, क. अनुवाद अधिकारी ने पुरस्कार ग्रहण किया।

विदेश मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है। आयोजित समारोह में 'क', 'ख' एवं 'ग' भाषा क्षेत्र में स्थित पासपोर्ट कार्यालयों में से राजभाषा हिंदी के क्रियान्वयन एवं प्रगामी प्रयोग हेतु उत्कृष्ट कार्य करने वाले सर्वश्रेष्ठ कार्यालय को उस भाषा क्षेत्र का पुरस्कार प्रदान किया जाता है। विदित हो कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ वर्ष 2019 से ही 'ख' क्षेत्र का पुरस्कार प्राप्त करता आ रहा है।

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ जनसाधारण को पासपोर्ट एवं इससे संबंधित उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान करने के साथ-साथ विदेश मंत्रालय द्वारा समय-समय पर जारी मार्गदर्शी सिद्धांतों तथा राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के तहत निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु सदैव कटिबद्ध रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं क्रियान्वयन हेतु समर्पित हमारा कार्यालय आगे भी इस हेतु प्रतिबद्ध रहेगा।

रिपोर्ट : **श्री राकेश सिंह**,
व. पा. सहायक

❖❖❖❖❖

नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है। - *गोपाललाल खत्री*

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को **100%** 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को **100%** 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को **65%** **4.** क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति **100%**	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को **90%** 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को **90%** 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** **4.**ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति **90%**	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को **55%** 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को **55%** 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** **4.** ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति **55%**
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	**100%**	**100%**	**100%**
3.	हिंदी में टिप्पण	**75%**	**50%**	**30%**
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	**70%**	**60%**	**30%**
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	**80%**	**70%**	**40%**
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	**65%**	**55%**	**30%**
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	**100%**	**100%**	**100%**
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	**100%**	**100%**	**100%**
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	**50%**	**50%**	**50%**
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	**100%**	**100%**	**100%**
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	**100%**	**100%**	**100%**
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	**100%**	**100%**	**100%**

13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	**25% (**न्यूनतम)	**25% (**न्यूनतम)	**25% (**न्यूनतम)
	(**ii**) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	**25% (**न्यूनतम)	**25% (**न्यूनतम)	**25% (**न्यूनतम)
	(**iii**) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	**100%**	**100%**	**100%**
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	**40%**	**30%**	**20%**
		(न्यूनतम अनुभाग)		
		सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए ।		

कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "हिन्दी गौरव" का विमोचन

दिनांक 19.11.2020 को श्रीमती सुनीता पुरी, अध्यक्ष, नराकास एवं प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, (उ.प.क्षेत्र), चंडीगढ़ के कर-कमलों से कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "हिन्दी गौरव" के चतुर्थ अंक का विमोचन किया गया।

आयकर भवन, चंडीगढ़ में आयोजित पत्रिका के विमोचन कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष महोदया ने कहा कि "सरकारी कामकाज में राजभाषा के अधिकाधिक प्रयोग करने की आवश्यकता है।" अध्यक्ष महोदया ने पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को को लेकर प्रसन्नता के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पत्रिका के प्रकाशन हेतु बधाई दी और भविष्य में राजभाषा हिंदी के प्रति इसी तरह समर्पित रहने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर श्री शिवास कविराज (क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी), श्री अमित कुमार रावत (उप पासपोर्ट अधिकारी), श्री सहदेव कौशीक, वरिष्ठ अधीक्षक, पत्रिका के संपादक श्री कृष्णा जी पाण्डेय, श्रीमती सोनम तोमर, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक सहित नराकास की सचिव श्रीमती नीना मल्होत्रा उपस्थित रहीं।

रिपोर्ट : **रामदास**, सहायक अधीक्षक

❖❖❖❖❖

हिंदी जाननेवाला व्यक्ति देश के किसी कोने में जाकर अपना काम चला लेता है। - *देवव्रत शास्त्री*

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद : वैश्विक सुरक्षा प्रबंधन का सर्वोच्च मंच

अमित कुमार रावत
उप पासपोर्ट अधिकारी

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद विश्व पर शांति-व्यवस्था को बनाए रखने और सामूहिक सुरक्षा के सिद्धांत का अनुपालन सुनिश्चित कराने का कार्यभार रहता है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की अस्थायी सदस्यता में समय-समय पर परिवर्तन होता रहता है। हाल ही में भारत 8वीं बार सुरक्षा परिषद का अस्थायी सदस्य चुना गया है। भारत, वर्ष 2021-22 के बीच सुरक्षा परिषद का अस्थायी सदस्य रहेगा। भारत ने जनवरी 2021 से दिसंबर 2022 तक की समयावधि के लिये मतदान करने वाले 192 देशों के सापेक्ष 184 देशों का समर्थन प्राप्त किया।

इससे पहले वर्ष 2011-12 में कजाख़स्तान द्वारा अपनी दावेदारी से पीछे हटने के बाद भारत ने मतदान करने वाले 190 देशों के सापेक्ष 187 देशों का समर्थन प्राप्त कर किया था। इससे पूर्व भी भारत वर्ष 1950-51, 1967-68, 1972-73, 1977-78, 1984-85, 1991-92 और 2011-12 में सुरक्षा परिषद का अस्थायी सदस्य रहा है।

संयुक्त राष्ट्र की सबसे महत्त्वपूर्ण इकाई सुरक्षा परिषद का गठन द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान वर्ष 1945 में हुआ था। ध्यातव्य हो कि सुरक्षा परिषद के पाँच स्थायी सदस्य हैं। विदित हो कि अस्थायी सदस्यों का चुनाव दो वर्ष के लिए होता है। सुरक्षा परिषद में क्षेत्रीय संतुलन कायम करने के उद्देश्य से अस्थायी सदस्य देशों का चुनाव किया जाता है।

सुरक्षा परिषद संयुक्त राष्ट्र का सबसे शक्तिशाली निकाय है जिसकी प्राथमिक जवाबदेही अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा कायम रखना है। इसकी शक्तियों में शांति अभियानों का योगदान, अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबंधों को लागू करना तथा सुरक्षा परिषद के प्रस्तावों के माध्यम से सैन्य कार्रवाई करना शामिल है।

बदलते वैश्विक परिदृश्य में सदस्य देशों पर बाध्यकारी प्रस्ताव जारी करने का अधिकार रखने वाला संयुक्त राष्ट्र एकमात्र निकाय सुरक्षा परिषद है। संयुक्त राष्ट्र संहिता (चार्टर) के तहत सभी सदस्य देश सुरक्षा परिषद के निर्णयों का पालन करने के लिये बाध्य हैं। ❖❖❖❖❖

भारत की बिंदी है हिंदी

सहदेव कौशिक
वरिष्ठ अधीक्षक

भारत की बिंदी है हिंदी
समरसता का सार है
परचम लहराती देश-विदेश में
क्या वह भाषा यहीं मेहमान है?

उच्च सम्मान अंग्रेजी को
और हिंदी के प्रयोग में आए शर्म
झूठा है अभिमान नहीं क्या
याद करो अपना तुम फर्ज

जो भाल की बिंदी फिकी हो तो
जिम्मेदार हर भारतवासी होगा
अपने सुराज की रानी हिंदी
इसे कोई कैसे कुछ और कहेगा

क्षेत्र में बांटी किसने हिंदी
किसने कहा कठिन है और कठोर
ऐसी-वैसी बुरा-भला कह
कौन मचाता अंग्रेजी का शोर

कौन रच रहा है कुचक्र
कि इसे दे दो अज्ञातवास
अंग्रेजी को सीने से लगा के
कौन कर रहा सिंहासन का प्रबंध

हिंदी को गौरव आदि कह
अंग्रेजी में देते भाषण
आज भी बने हैं गुलाम
कैसा प्यार, कैसा यह प्रण

हिंदी भाषा राष्ट्र की अपनी
हिंदी अपनी राजभाषा है
समुचित मिले अधिकार इसे
बस यही एक अभिलाषा है।

अपनी सरलता के कारण हिंदी प्रवासी भाइयों की स्वत: राष्ट्रभाषा हो गई। - *भवानीदयाल संन्यासी*

पंचतत्व

नीलम कुमारी

क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा ।
पंच रचित् अधि अधम शरीरा ॥

भारतीय दर्शन तथा योग में पृथ्वी (क्षिति), जल (अप्), अग्नि (ताप), वायु (पवन) एवं गगन (शून्य) को पंचतत्व या पंचमहाभूत कहा जाता है। पंचतत्व को ब्रह्मांड में व्याप्त लौकिक एवं अलौकिक वस्तुओं का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष कारण और परिणति माना गया है। आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी पांच महाभूत माने जाते हैं। पंचभूतों में प्रत्येक का विशिष्ट गुण माना गया है। आकाश का विशिष्ट गुण शब्द, वायु का विशिष्ट गुण स्पर्श, अग्नि का विशिष्ट गुण रूप, जल का विशिष्ट गुण स्वाद और पृथ्वी का विशिष्ट गुण गंध होता है।

ब्रह्मांड में प्रकृति से उत्पन्न सभी वस्तुओं में पंचतत्व की अलग-अलग मात्रा में मौजूद है। अपने उद्भव के बाद सभी वस्तुएं नश्वरता को प्राप्त होकर इनमें ही विलीन हो जाती है। यहां तत्व के नाम का अर्थ उनके भौतिक रूप से नहीं है- यानि जल का अर्थ पानी से जुड़ी हर चीज, अग्नि का अर्थ आग से जुड़ी हर चीज शामिल होगी। हिंदू विचारधारा के समान यूनानी, जापानी तथा बौद्ध मतों में भी पंचतत्व को महत्वपूर्ण एवं गूढ अर्थोंवाला माना गया है।

हमारे मनीषियों ने इन पंच महाभूतों का इस प्रकार विश्लेषण किया है-

- पृथ्वी तत्व: यह तत्व असीम सहनशीलता का द्योतक है और इससे मनुष्य धन-धान्य से परिपूर्ण होता है। इसके त्रुटिपूर्ण होने से लोग स्वार्थी हो जाते हैं।
- जल तत्व: यह तत्व शीतलता प्रदान करता है। इसमें विकार आने से सौम्यता कम हो जाती है।

- अग्नि तत्व: यह तत्व विचारशक्ति में सहायक बनता है और मस्तिष्क की भेद अंतर परखने वाली शक्ति को सरल बनाता है। यदि इसमें त्रुटि आ जाय तो हमारी सोचने की शक्ति का ह्रास होने लगता है।
- वायु तत्व: यह तत्व मानसिक शक्ति तथा स्मरण शक्ति की क्षमता व नजाकत को पोषण प्रदान करता है। अगर इसमें विकार आने लगें तो स्मरण शक्ति कम होने लगती है।
- आकाश तत्व: यह तत्व शरीर में आवश्यक संतुलन बनाये रखता है। इसमें विकार आने से हम शारीरिक संतुलन खोने लगते हैं।

इन पर ही हमारा भौतिक आधार टिका हुआ है। हमारी संरचना के हिस्से और हमारे अंत के हिस्सेदार यही तो हैं पंचमहाभूत।

❖❖❖❖❖

कलाकृति : सुश्री किरन कुमारी

राष्ट्रभाषा हिंदी का किसी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है। - *अनंत गोपाल शेवड़े*

पासपोर्ट सेवा : डिजिटल भारत के सपनों को साकार करती एक महत्वाकांक्षी परियोजना

श्री कृष्णा जी पाण्डेय
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

ध्येय / दृष्टिकोण

"व्यवस्थित कार्य प्रक्रिया तथा प्रतिबद्ध, प्रशिक्षित एवं अभिप्रेरित कर्मचारी बल के माध्यम से नागरिको को समयबद्ध रूप में, पारदर्शी तरीके से, सुगमतापूर्वक, विश्वसनीय तौर पर और आरामदायक वातावरण में पासपोर्ट सेवाएं प्रदान करना"

डिजिटल भारत के अंतर्गत विदेश मंत्रालय की एक महत्वाकांक्षी परियोजना

भारत सरकार ने, हाल के वर्षों में, सार्वजनिक सेवाओं के वितरण में सुधार लाने के लिए ई-शासन को अपनाने तथा इस युग में प्रवेश करने के लिए कई कदम उठाए हैं। पासपोर्ट सेवा राष्ट्रीय ई-शासन योजना (एनईजीपी) के अंतर्गत मिशन मोड परियोजनाओं (एमएमपी) के रूप में चिन्हित एक उच्च प्रभाव की परियोजना है। यह परियोजना भारत में पासपोर्ट सेवाओं में सुधार पर केंद्रित है।

विदेश मंत्रालय देश भर में फैले 36 पासपोर्ट कार्यालयों, जिसके अंतर्गत 93 पासपोर्ट सेवा केंद्र (पीएसके) तथा 426 डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र (पीओपीएसके) आते हैं, और विदेश में 190 भारतीय मिशन और पोस्ट के एक नेटवर्क के माध्यम से भारतीय नागरिकों को पासपोर्ट जारी कर रहा है।

केवल वेबसाइट :
https://www.passportindia.gov.in
अथवा गूगल प्ले स्टोर से mPassport Seva {Consular, Passport and Visa (CPV) Division} मोबाइल ऐप डाउनलोड कर पासपोर्ट तथा पासपोर्ट सेवाओं हेतु आवेदन किया जा सकता है।

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है। - *रविशंकर शुक्ल*

पासपोर्ट की आवश्यकता क्यों?

शिक्षा, पर्यटन, तीर्थयात्रा, चिकित्सा उपस्थिति, व्यावसायिक उद्देश्यों और परिवार की यात्रा के लिए विदेश यात्रा करने के लिए पासपोर्ट एक आवश्यक यात्रा दस्तावेज होता है। बढ़ती अर्थव्यवस्था और वैश्वीकरण के प्रसार के कारण हाल के कुछ वर्षों में पासपोर्ट और संबंधित सेवाओं की मांग में वृद्धि देखने को मिली है।

'सुधार, विस्तार और आपके द्वार'।

सुधार का तात्पर्य सेवाओं में सुधार से है। इस सदी के पहले दशक तक पासपोर्ट के लिए मारामारी-आपाधापी रहती थी। तब पासपोर्ट बनवाना टेढ़ी खीर माना जाता था। पासपोर्ट की इस बढ़ती मांग को पूरा करने के साथ-साथ भारतीय नागरिकों को प्रदान किए जा रहे पासपोर्ट सेवाओं के वितरण में सुधार करने के लिए विदेश मंत्रालय ने मई 2010 में पासपोर्ट सेवा प्रोजेक्ट (पीएसपी) की शुरुआत की। एक अनुमान के अनुसार पासपोर्ट की मांग प्रतिवर्ष लगभग 10% से बढ़ने का अनुमान है। पासपोर्ट और संबंधित सेवाओं के लिए यह व्यापक और बढ़ती मांग बड़े शहरों और छोटे कस्बों दोनों से आ रही है। माँगों की पूर्ति, पहुंच और उपलब्धता बनाने के लिए पासपोर्ट से सेवाओं में सुधार के साथ-साथ इसका विस्तार भी किया गया है। यह विस्तार केवल राज्यों को संघ शासित प्रदेशों की राजधानियों तक ही सीमित नहीं रहा। अब यह विस्तार जिला मुख्यालय तक हो गया है और इसी कड़ी को हम 'आपके द्वार' की संज्ञा दे रहे हैं।

नव संकल्प, नव विचार

पासपोर्ट सेवा परियोजना (पीएसपी) को सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) प्रणाली में शुरू किया गया है। इस प्रणाली के तहत वर्तमान में टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) सेवा प्रदान कर रही है। इस प्रणाली के अंतर्गत संप्रभु और प्रत्ययी कार्यों के अधिकार, जैसे कि पासपोर्ट को प्रमाणित करना, प्रदान करना, जारी करना/निरस्त करना, विदेश मंत्रालय के पास सुरक्षित है। सामरिक नियंत्रण का स्वामित्व जिसमे डाटा/जानकारी भी निहित है, का अधिकार भी मंत्रालय के पास है।

मिलकर साथ, बढ़ाएँ हाथ, भारत बने एक महान राष्ट्र

स्वावलंबन और आत्मनिर्भर भारत की प्रक्रिया के तहत पासपोर्ट से संबंधित सेवाओं के वितरण के लिए पासपोर्ट सेवा एक सरल, कुशल और पारदर्शी प्रक्रिया को अपनाती है। इस सेवा का उद्देश्य आवेदक के विवरणों की वास्तविकता के सत्यापन के लिए राज्य पुलिस के साथ मिलकर कार्य करना है। साथ ही साथ भारत भर में पासपोर्ट की डिलीवरी के लिए भारतीय डाक के साथ मिलकर कार्य करना भी है।

❖❖❖❖❖

हिंदी भाषा अपनी अनेक धाराओं के साथ प्रशस्त क्षेत्र में प्रखर गति से प्रकाशित हो रही है। - *छविनाथ पांडेय*

सीख

वंदना
सहायक अधीक्षक

एक समय की बात है स्वामी विवेकानंद अपने आश्रम में वेदों का पाठ कर रहे थे , तभी उनके पास चार ब्राह्मण आए वह बड़े व्याकुल थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह किसी प्रश्न का हल ढूंढने के लिए परिश्रम कर रहे हैं|

चारों ब्राह्मण ने स्वामी जी को प्रणाम किया और कहा – स्वामी जी ! हम बड़ी दुविधा में हैं , आपसे अपने समस्या का हल जानना चाहते हैं। हमारी जिज्ञासाओं को शांत करें।

स्वामी जी ने आश्वासन दिया और जानना चाहा कैसी जिज्ञासा ? कैसा प्रश्न है आपका ?

ब्राह्मण बोले महात्मा हम चारों ने वेद – वेदांतों की शिक्षा ग्रहण की है। हम सभी समाज में अलग-अलग दिशाओं में घूम कर समाज को अपने ज्ञान से सुखी, संपन्न और समृद्ध देखना चाहते हैं। इसके लिए हमारा मार्गदर्शन करें!

स्वामी जी के मुख पर हल्की सी मुस्कान आई और उन्होंने ब्राह्मण देवताओं को कहा – हे ब्राह्मण ! आप सभी यह सब लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं, इसके लिए आपको मिलकर समाज में शिक्षा का प्रचार प्रसार करना होगा।

ब्राह्मण देवता शिक्षा से हमारा लक्ष्य कैसे प्राप्त हो सकता है ?

स्वामी जी जिस प्रकार बगीचे में पौधे को लगाकर बाग को सुंदर बनाया जाता है , ठीक उसी प्रकार शिक्षा के द्वारा समाज का उत्थान संभव है।

शिक्षा व्यक्ति में समझ पैदा करती है , उन्हें जीवन के लिए समृद्ध बनाती है। साधनों से संपन्न होने में शिक्षा मदद करती है , सभी अभाव को दूर करने का मार्ग शिक्षा दिखाती है। यह सभी प्राप्त होने पर व्यक्ति स्वयं समृद्ध हो जाता है।

ब्राह्मण देवता को अब स्वामी विवेकानंद जी का विचार बड़े ही अच्छे ढंग से समझ आ चुका था। अब उन्होंने मिलकर प्रण लिया वह अपने शिक्षा का प्रचार – प्रसार समाज में करेंगे यही उनकी समाज सेवा होगी। ❖❖❖❖❖

जीवन में शिक्षा का महत्व

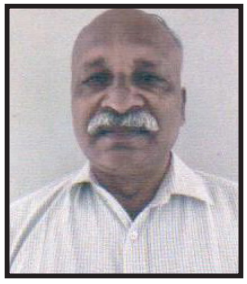

रूपलाल
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

किसी भी राष्ट्र के निर्माण व विकास के लिए यह आवश्यक है कि वहाँ के नागरिक को अच्छी शिक्षा मिले। भारतीय दर्शन में कहा भी गया है:-

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाध्दनमाप्नोति धनाध्दर्मं ततः सुखम् ।।

अर्थात विद्या विनय या विनम्रता प्रदान करती है, विनम्रता से मनुष्य योग्यता प्राप्त करता है। अपनी योग्यता के दम पर मनुष्य धन प्राप्त करता है और धन से धार्मिक कार्य संपन्न हो सकते हैं, धार्मिक कार्य से असीम आनन्द की प्राप्ति होती है। इसका मूल यह है कि मनुष्य को ज्ञानवान होने की महती आवश्यकता है।

वर्तमान युग में वैसे तो हर मनुष्य शिक्षा के महत्व को समझता है, लेकिन आज भी हर किसी को शिक्षा के समान अवसर प्राप्त नहीं होते। इसके कई कारण हैं और उन कारणों में गरीबी प्रमुख है। हालांकि भारत में शिक्षा का अधिकार अधिनियम पहले से लागू है, परंतु आज भी कई अभिभावक अपने बच्चे को उचित शिक्षा नहीं दे पाते, कई बच्चे अपनी स्कूली शिक्षा तक पूरी नहीं कर पाते। गरीबी अथवा कठिनाइयों में जीवन का गुजारा करने के कारण कई बच्चे छोटी उम्र में ही काम-धंधे आदि में लग जाते हैं; और शिक्षा उनके लिए सपना भर रह जाता है।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि सरकारें ऐसे बच्चों के लिए अनेक लाभकारी नीतियां बनाती हैं, लेकिन उसका भी लाभ कम ही लोग उठा पाते हैं। यह सही समय है कि इन कारणों के निवारण हेतु ठोस उपाय किए जाएँ। शिक्षा के बगैर मनुष्य जीवन में आने वाली कठिनाइयों से जीवन के पग-पग पर दो-चार होता रहता है। कहा जाता है कि शिक्षा के बिना मानव एक पशु के समान है। कहा तो यहाँ तक गया है कि:-

येषां न विद्या न तपो न दानं,
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः

ते मृत्युलोके भुवि भारभूता,
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

अर्थात जिस मनुष्य के पास न विद्या है, न तप है न दान देने की प्रवृत्ति है। उसके पास न ज्ञान है, न उत्तम आचरण है, न तो कोई गुण है और न धर्म के प्रति आस्था है, वे लोग इस लोक में पृथ्वी पर भार बनकर मनुष्य रूपी पशु होकर विचरण करते हैं।

एक बच्चे का पहला शैक्षणिक संस्थान उसका घर होता है। घर में बच्चा अपनी माँ आदि से 'क', 'ख', 'ग'... अर्थात बोलना, उठना बैठना आदि सीखता है। लेकिन व्यवहारिक जीवन के लिए स्कूली शिक्षा जरूरी है। स्कूली शिक्षा से बच्चे की बुद्धि का विकास होता है, वह अपने आस-पास की वस्तुओं सहित देश-दुनिया की विधियों-गतिविधियों से परिचित होता है। सच तो यह है कि शिक्षा उसको नैतिकता का ज्ञान कराती है। शोधपरक शिक्षा पर जोर देकर और इससे संबंधित नीतियां बनाकर उसे सही तरीके से कार्यान्वित करने से हमारा देश हर क्षेत्र में अग्रणी बन सकेगा।

❖❖❖❖❖

पर्यावरण दूषण, दूर हो प्रदूषण

रमेश चंद्र,
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

पर्यावरण प्रदूषण आज के दौर की सबसे बड़ी समस्या बनती जा रही है। प्रदूषण एवं प्रकृति के साथ छेड़छाड़ की समस्या से हमारा समाज, लोगों का स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है। इससे हमारा सामाजिक ताना-बाना दिन-प्रतिदिन तिनका-तिनका छिन्न-भिन्न हो रहा है।

हमारे द्वारा स्थापित किए जा रहे कल-कारखानों से एक ओर रोजगार का सृजन होता है तो दूसरी ओर उन कल-कारखानों के आसपास जनसंख्या का अत्यधिक दबाव बढ़ जाता है। कल-कारखानों से निकालने वाले धुएँ व अन्य विषैले पदार्थ से प्रदूषण फैलता है। आस-पास रहने वाले लोग जाने-अनजाने में उस प्रदूषण से प्रभावित हो रहे हैं। लोगों में कई तरह की बीमारियां फैलती हैं।

उपाय : हमें ऐसी कार्यप्रणाली अपनानी चाहिए, जिससे कारखाने के आस-पास प्रदूषण तथा आस-पास रह रहे समुदाय पर उस प्रदूषण का असर कम से कम हो। इसके लिए सरकार, सिविल सोसाइटी और आम जनता तीनों को एकसाथ मिलकर काम करने की आवश्यकता है। ❖❖❖❖❖

राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है। - *बालकृष्ण शर्मा नवीन*

तालाबंदी

रमेश कुमारी
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

कोविड की इस महामारी ने
तालाबंदी कर दी है
रिश्तों की भरी गागर को भी
दूर सभी से कर दी है

चारों ओर जब मची पुकार
लगा कि कौन किसका साथी है
अपने देखे, हैं अनदेखे
मौत ही सच में दासी है

दूर कभी न होते थे जो
मिलने को भी तरस रहे
कैसी है पीड़ा असहाय
हाय! नैना छुप-छुप बरस रहे

ऐसा लगता दूर-दूर तक
दिखता बस अंधियारा है
असल सच्चाई यह है कि अब
साहस और धैर्य सहारा है

स्व-अनुशासन और संयम
जीवन के अभिप्राय बने हैं
खत्म हो जल्दी ये महामारी
जीवन पटरी पर फिर लौटे।

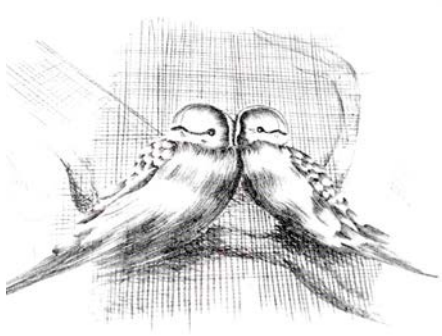

कोरोना की सीख

राकेश कुमार
कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक

कोरोना महामारी ने लोगों की जिंदगी बदल दी है। इस बीमारी के बाद लोगों के सोचने का तरीका बदल गया है। अब तक किताबों में पढ़ी हुई बातें जैसे कि 'जिंदगी बहुत छोटी है।', 'जीवन में हमें खुश रहना चाहिए।' की सार्थकता को लोगों ने बहुत नजदीक से महसूस किया है। साथ रहने वाले अचानक साथ छोड़ कर इहलोक को जाने लगे तो जीवन की नश्वरता व क्षणभंगुरता का भान होने लगा। सबको समझ आने लगा कि भागमभाग की यह दौड़ व्यर्थ ही है। पता नहीं कौन सा दिन आखिरी हो जाए।

इस महामारी के दौरान सरकार भले ही लोगों से सामाजिक दूरी आदि का समुचित पालन करने पर जोर देती रही, लेकिन यह भी सच है कि इस दौर में लोग दूर रहते हुए भी पास होते गए। कुछ लोग तो इससे पहले बस अपने स्वार्थ सिद्ध होने तक सीमित रिश्ते रखते थे, पर इस कालखंड में अपनों के चले जाने से रिश्तो का महत्व पता चला। क्या ऐसा आप्के साथ नहीं हुआ है कि क्ल क्क दूर से देखकर निकलने वाले भी अब हाल चाल पूछने लगे हैं? वह कहते हैं ना कि एक सिक्के के दो पहलू होते हैं। बेशक कोरोना महामारी ने हमसे हमारे अपनों को छीना, पर साथ ही साथ लोगों को इंसान बनने सिखा दिया। इसने प्रकृति की हर चीज की कद्र करनी सिखा दी।

❖❖❖❖❖

भाषा विचार का परिधान है। - *डॉ. जॉनसन*

'बटोहिया' : कल, आज और कल

श्री कृष्णा जी पाण्डेय
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

'बटोहिया' बाबू रघुवीर नारायण सिंह जी की कालजयी रचना है। 30 अक्टूबर 1884 ईस्वी को बिहार के छपरा जिला दहियावां में जन्मे श्री रघुबीर नारायण का उनकी मातृभाषा भोजपुरी सहित हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, संस्कृत पर बराबर का अधिकार था।

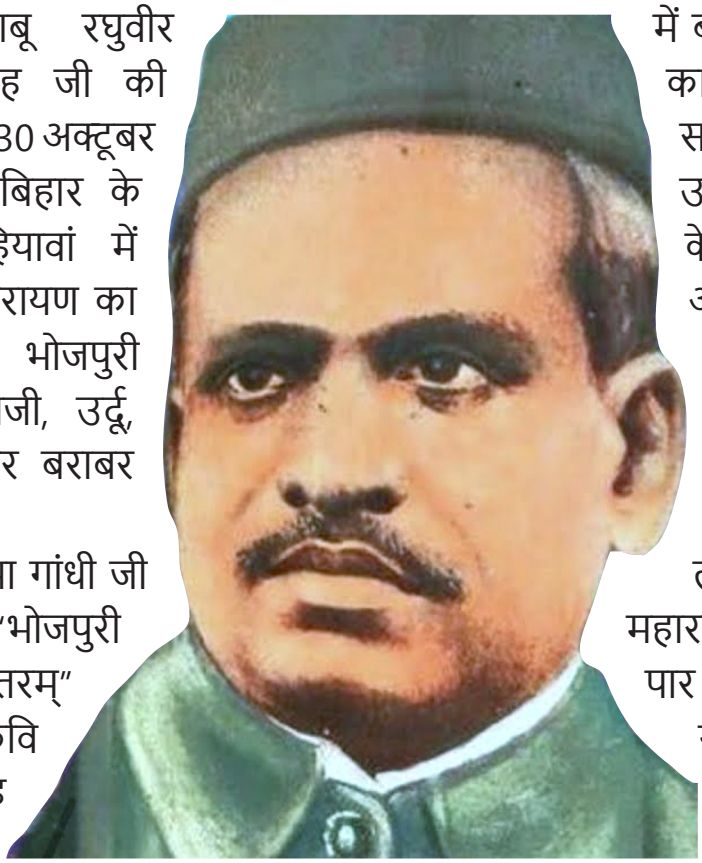

बाबू रघुबीर नारायण

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने बटोहिया को "भोजपुरी भाषा का वंदे मातरम्" की संज्ञा दी। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर जी ने बाबू रघुवीर नारायण को "बिहार में राष्ट्रीयता के आदिचारण और जागरण के अग्रदूत" कहा था। इसकी रचना 1911 में हुई थी। बटोहिया में वस्तुतः भारत की आजादी के लिए लड़ने वाले भारतीयों का मनोभाव प्रतिबिंबित होता है। आज़ादी की लड़ाई में बाबू रघुवीर नारायण जी का योगदान साहसिक और साहित्यिक दोनों रहा और उनकी इस रचना में भारत के प्राकृतिक सौंदर्य की अप्रतिम व्याख्या मिलती है। आजादी की लड़ाई के दिनों में इस रचना की कृति भारत में बंगाल से लेकर पंजाब तक और असम से लेकर महाराष्ट्र तक रही। वहीं सरहद पार मॉरीशस, त्रिनिदाद, गुयाना, सूरीनाम, फिजी, त्रिनिदाद, मॉरिसस से लेकर अफ्रीकी देशों और मलेशिया, सिंगापुर, हाँगकांग आदि देशों में यह गूँजती रही।

बटोहिया का पहला वाचन सन 1912 ईस्वी में बिहार के पहले मुख्यमंत्री डॉ. श्रीकृष्ण सिंह जी के छोटे भाई श्री गोपालकृष्ण ने 'बिहारी

तस्वीर साभार : स्वरूप चंद मेहता, सहायक अधीक्षक

स्टूडेंट कांफ्रेंस' चंपारण (मोतिहारी) में किया था। भारतीय गिरमिटिया समुदाय के लोगों के बीच इसकी काफी लोकप्रियता थी। हालांकि यह गिरमिटिया लोगों का गीत नहीं है और न ही इसे उन लोगों को ध्यान में रख कर लिखा गया था। सुप्रसिद्ध इतिहासकार सर यदुनाथ सरकार बटोहिया पर अपनी समीक्षा में रघुवीर नारायण जी को लिखते हैं "आपकी रचना बटोहिया मुझे बरबस आपकी याद दिलाती है।"

आचार्य शिवपूजन सहाय 'लक्ष्मी पत्रिका' में लिखते हैं कि 'बटोहिया कविता का प्रचार बिहार के घर-घर में है। शहर और देहात के अनपढ़ लड़के इसे गली-गली में गाते फिरते हैं, पढ़े-लिखों का कहना ही क्या है। यदि एक ही गीत लिखकर बाबू रघुवीर नारायण अपनी प्रतिभाशाली लेखनी को रख देते तो भी उनका नाम अजर और अमर बना रहता।' बटोहिया सन 1970 तक बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक समिति की कक्षा 10 एवं 11 के लिए प्रकाशित 'हिंदी काव्य संग्रह' के आवरण पृष्ठ पर प्रकाशित होता रहा, जिसे बाद में हटा दिया गया। बटोहिया आज भी भारत के गौरव का बखान करती है और अपनी रचना काल से इतनी ही प्रासंगिक है। मूल रचना अगले पृष्ठ पर है.....

हिंदी भाषा अपनी अनेक धाराओं के साथ प्रशस्त क्षेत्र में प्रखर गति से प्रकाशित हो रही है। - *छविनाथ पांडेय*

बटोहिया : बाबू रघुबीर नारायण

सुंदर सुभूमि भैया भारत के देसवा से
मोरे प्रान बसे हिम-खोह रे बटोहिया
एक द्वार घेरे रामा हिम-कोतवलवा से
तीन द्वार सिंधु घहरावे रे बटोहिया

जाहु-जाहु भैया रे बटोही हिंद देखी आऊ
जहवां कुहुंकी कोइली गावे रे बटोहिया
पवन सुगंध मंद अगर चंदनवां से
कामिनी बिरह-राग गावे रे बटोहिया

बिपिन अगम घन सघन बगन बीच
चंपक कुसुम रंग देबे रे बटोहिया
द्रुम बट पीपल कदंब नींब आम वृछ
केतकी गुलाब फूल फूले रे बटोहिया

तोता तुती बोले रामा बोले भेंगरजवा से
पपिहा के पी-पी जिया साले रे बटोहिया
सुंदर सुभूमि भैया भारत के देसवा से
मोरे प्रान बसे गंगा धार रे बटोहिया

गंगा रे जमुनवा के झिलमिल पनिया से
सरजू झमकि लहरावे रे बटोहिया
ब्रह्मपुत्र पंचनद घहरत निसि दिन
सोनभद्र मीठे स्वर गावे रे बटोहिया

उपर अनेक नदी उमड़ि-घुमड़ि नाचे
जुगन के जदुआ जगावे रे बटोहिया
आगरा प्रयाग कासी दिल्ली कलकतवा से
मोरे प्रान बसे सरजू तीर रे बटोहिया

जाहु-जाहु भैया रे बटोही हिंद देखी आऊ
जहां ऋसि चारो बेद गावे रे बटोहिया
सीता के बीमल जस राम जस कृष्ण जस
मोरे बाप-दादा के कहानी रे बटोहिया

ब्यास बालमीक ऋसि गौतम कपिलदेव
सूतल अमर के जगावे रे बटोहिया
रामानुज-रामानंद न्यारी-प्यारी रूपकला
ब्रह्म सुख बन के भंवर रे बटोहिया

नानक कबीर गौर संकर श्रीरामकृष्ण
अलख के गतिया बतावे रे बटोहिया
बिद्यापति कालीदास सूर जयदेव कवि
तुलसी के सरल कहानी रे बटोहिया

जाहु-जाहु भैया रे बटोही हिंद देखि आऊ
जहां सुख झूले धान खेत रे बटोहिया
बुद्धदेव पृथु बिक्रमार्जुन सिवाजी के
फिरि-फिरि हिय सुध आवे रे बटोहिया

अपर प्रदेस देस सुभग सुघर बेस
मोरे हिंद जग के निचोड़ रे बटोहिया
सुंदर सुभूमि भैया भारत के भूमि जेही
जन 'रघुबीर' सिर नावे रे बटोहिया

संदर्भ ग्रंथ व सूत्र:

1. पाँच सालों का संसद सफर : श्री हरिवंश, माननीय उपसभापति, राज्यसभा
2. श्री निराला कुमार तिवारी
3. श्री नवीन कुमार तिवारी
4. सुश्री चंदन तिवारी / पुरबियातान यूट्यूब चैनल
5. बेजोड़ यूट्यूब चैनल
6. आखर भोजपुरी
7. भोजपुरी साहित्यांगन

❖❖❖❖❖

भाषा विचार का परिधान है। - *डॉ. जॉनसन*

पासपोर्ट सेवा दिवस 24 जून के अवसर पर माननीय विदेश मंत्री जी के संदेश का वाचन किया गया

हिंदी को गंगा नहीं बल्कि समुद्र बनना होगा। - *आचार्य विनोबा भावे*

बच्चों का कोना

"और बच्चों... तुम्हारे खुश रहने मात्र से बची रहेगी भविष्य में 'सजीव मनुष्यता'।" - सुश्री मौसुमि गोप

हर बच्चा इस संदेश के साथ दुनिया में आता है कि भगवान अभी भी मनुष्य से नाउम्मीद नहीं हुआ है - रबीन्द्रनाथ टैगोर

हाथी और छह दृष्टि दिव्यांग

प्रफुल चंद्र साह
अधीक्षक

एक गांव में छह दृष्टि दिव्यांग व्यक्ति आपस में मिलजुल कर खुशीपूर्वक रहते थे। एक बार उनके गांव में एक हाथी आया। जब उन्हें इस बात का पता चला तो उन लोगों ने भी सोचा कि हम लोग देख तो सकते नहीं, तो क्यों न हम लोग छूकर महसूस करें कि हाथी हाथी कैसा होता है। वे हाथी के पास पहुंचे और फिर एक-एक कर उसे छूना शुरु कर दिया। छूने के बाद हाथी का पैर छूनेवाला पहला व्यक्ति बोला "हाथी एक खंबे जैसा होता है"। हाथी की पूँछ छूनेवाले व्यक्ति ने पहले की बात काटते हुए कहा, नहीं-नहीं, हाथी रस्सी की तरह होता है।

हाथी के अलग-अलग रूप बताने और अपनी बात सही कहने के कारण सभी एक-दूसरे की बात-काटने लगे। अंत में उनमें आपस में झगड़ा हो गया और वे अलग-अलग रहने लगे। एक दिन उस गाँव से एक बुद्धिमान व्यक्ति गुजर रहा था। उसने उन सभी से अलग-अलग रहने का कारण पूछा। सबने हाथी के जिस अंग को हुआ था, वही हाथी का रूप बतलाया। सबकी बात ध्यान से सुनने के बाद बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा कि आप सभी अपनी-अपनी जगह सही हैं। क्योंकि आप में से किसी ने हाथी को देखा नहीं है। सिर्फ स्पर्श किया है, जिसने हाथी के जिस अंग को स्पर्थ किया उसे वैसा हाथी का रूप लगा। तब जाकर सभी छह की समझ में आया कि वे बिना पूरी बात समझे आपस में झगड़ रहे थे। ठीक ऐसे ही हम लोगों के जिंदगी में भी होता है। कहानी का तात्पर्य यह है कि हम सच्चाई को जाने बिना अपनी बात को सही और दूसरों की बात गलत बताते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि अपनी बात को रखते हुए दूसरों की बात को भी ध्यान से सुनना-समझना चाहिए।

❖❖❖❖❖

समस्त आर्यावर्त या ठेठ हिंदुस्तान की राष्ट्र तथा शिष्ट भाषा हिंदी या हिंदुस्तानी है। - *सर जार्ज ग्रियर्सन*

समय कहाँ है

रमनदीप कौर
सहायक अधीक्षक

खुशी छुपा कर रख रखा है
पर हँसी के लिए समय कहाँ है
भागमभाग की होड़ सी है
ज़िंदगी के लिए समय कहाँ है

लोरी याद तो है मुझको पर
माँ को माँ कहने का समय कहाँ है
रिश्तों के चटकते धागे
सुलझाने का समय कहाँ है

बचा समय खा गया मोबाइल
दोस्तों के लिए समय कहाँ है
आँख उनींदी सी भारी है
सोने का पर समय कहाँ है

कौन है अपना, कौन पराया
तय करने का समय कहाँ है
हर पल मरने वालों के लिए
जीने के लिए समय कहाँ है।

मोबाइल

शिव कुमार सिंह
कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक

हर कान पर चिपका रहता
मुझे लेकर लोग मारे स्टाइल
लोगों की हर बात है कहता
मैं हूँ, मैं हूँ, मैं हूँ मोबाइल

मैं संचार की हूँ पहचान
प्रयोग करे मुझे हर इंसान
भेजूँ झटपट मैं संदेश
फोन लगे ना हो लेट

देश-विदेश में मेरा व्यापार
अलग कंपनी अलग ब्रांड
सभी हैं करते मुझसे प्यार
बिन मेरे अब चले न काम

दिलों से दिल को मैं हूँ जोड़ता
लाता होठों पर मुस्कान
हर कोई रखे अलग प्रोफाइल
मैं हूँ, मैं हूँ, मैं हूँ मोबाइल।

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है। - *रविशंकर शुक्ल*

कोशिश कर

साधना शुक्ला,
वरिष्ठ अधीक्षक

कोशिश कर, हल निकलेगा,
आज नही तो, कल निकलेगा।
अर्जुन सा लक्ष्य रख, निशाना लगा,
मरुस्थल से भी फिर, जल निकलेगा।
मेहनत कर, पौधों को पानी दे,
बंजर में भी फिर, फल निकलेगा।
ताक़त जुटा, हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी, बल निकलेगा।
सीने में उम्मीदों को, ज़िंदा रख,
समन्दर से भी, गंगाजल निकलेगा।
कोशिशें जारी रख, कुछ कर गुज़रने की,
जो कुछ थमा-थमा है, चल निकलेगा।
कोशिश कर, हल निकलेगा,
आज नहीं तो, कल निकलगा।

कर्तव्य पथ

रोशन सिंह
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

जब तक रहे साँसों में साँस
तब तक न छोड़ना आस
सच्चाई से आगे बढ़ना
कभी न होना तुम परेशान

अन्न यहीं का, जल यहीं का
रखना हरदम ये तुम ध्यान
गरीब और असहाय की
पीड़ा अपनी बूझ बढ़ाना हाथ

झुकना नहीं, रुकना नहीं
इस बात का रखना मान
ईमानदारी, सच्चाई से
देश की सेवा हो अभिमान

अपने कर्तव्य पथ पर
मिलेंगे तुम्हें काँटें भी
थमना नहीं, रुकना नहीं
भ्रष्टाचार का करना काम तमाम

मातृभूमि पर आँच न आए
करना तुम भी यह इंतजाम
समय जो आए कर देना तुम
एक क्या सौ जीवन बलिदान।

वही भाषा जीवित और जाग्रत रह सकती है जो जनता का ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व कर सके। - *पीर मुहम्मद मूनिस*

समय का सदुपयोग

सुखदेव कुमार
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

समय संसार की सबसे कीमती वस्तु है, जो एक बार खो जाने पर दोबारा नहीं मिलती। यदि कोई समय का सदुपयोग नहीं कर पाता तो वह जीवन में अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। हमारे जीवन में समय का सबसे अधिक महत्व इसलिए भी है क्योंकि हमें समय के मूल्य को पहचानकर उसका सदुपयोग करना होता है। समय बड़ा ही बलवान होता है।

समय का सदुपयोग करना नितांत आवश्यक हो जाता है। समय सफलता की कुंजी है। यह अपनी गति से चलता है। यह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। चाहे कोई राजा हो या फकीर, इसीलिए समय नष्ट न करके इसका पाबंद होना और अपने कार्यों का समय पर निपटाना जरूरी होता है।

समय सब का संचालन करता है। यह आगे की दिशा में चलता रहता है। कबीरदास जी कहते हैं 'कल करे सो आज कर, आज करे सो अब; पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब।।' जैसे किसी भी काम को टालते रहने, आज नहीं कल, कल का काम परसों करने से उन्नति-प्रगति नहीं हो सकती।

समय का सही उपयोग करने वाला व्यक्ति सफलता हासिल करता है। इसका दुरुपयोग करने वाला पीछे रह जाता है। इसलिए समय की शक्ति को पहचानिए और जीवन में आगे बढ़ने के लिए समय का पाबंद बनिए।

❖❖❖❖❖

हमारी नागरी दुनिया की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि है। - *राहुल सांकृत्यायन*

'राजभाषा विभाग' की पत्रिका 'राजभाषा भारती का 158वां अंक माननीय विदेश राज्य मंत्री श्री वी. मुरलीधरन जी को भेंट करते हुए माननीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय जी।

विश्व हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर पुरस्कार विजेता टीम

मैं मानता हूँ कि भारत की आधुनिक भाषाओं में हिंदी ही सच्चे अर्थ में सदैव भारतीय भाषा रही है, क्योंकि वह निरन्तर भारत की एक समग्र चेतना को वाणी देने का चेतन प्रयास करती रही है। और सभी भाषाओं में प्रदेश बोला है- कई बार बड़े प्रभावशाली ढंग से बोला है, हिंदी में आरंभ से ही देश बोलता रहा है-भले ही कभी-कभी कमज़ोर स्वर में भी बोला है।

-सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय'

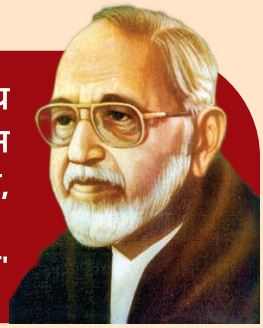

अबतक प्रकाशित अंक

पढ़ने के लिए
स्कैन करें

पासपोर्ट तथा पासपोर्ट सेवाओं हेतु आवेदन केवल वेबसाइट
https://www.passportindia.gov.in
अथवा गूगल प्ले स्टोर से **mPassport Seva** (Consular, Passport and Visa (CPV) Division)
मोबाइल ऐप डाउनलोड कर किया जा सकता है।

वसुधैव कुटुम्बकम्